Question Paper Code : 7635

एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2018

संस्कृत

(वर्ग 'ख' साहित्य)

[पंचम प्रश्नपत्रम्]

(निबन्धोऽनुवादश्च)

समयः - घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्काः - 70**

निर्देश : पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः। प्रथमः प्रश्नोऽनिवार्यः। प्रतिवर्गादेकः प्रश्न समाधेयाः।

1. अधोलिखितेषु विषयेषु टिप्पणी दीयन्ताम् - [3×10=30]

   (क) प्रतीयमानम्।

   (ख) काव्यहेतुः।

   (ग) काव्यस्य भेदाः।

   (घ) रससूत्रम्।

   (ङ) रूपकस्य भेदाः।

   (च) अलङ्कारस्य लक्षणम्।

चतुर्थो वर्गः

8. अधोलिखितस्य संस्कृतेनानुवादो विधीयताम् - [10]

   प्राचीनकाल में जीवन को दो प्रकार की विद्या परा तथा अपरा में विभक्त किया गया था। परा का अर्थ ज्ञान, कर्म और उपासना द्वारा ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या का बोध कराना था। अपरा विद्या का अर्थ लौकिक तथा सामाजिक स्थितियों का अनुशीलन था। परन्तु इनमें परा विद्या पर अधिक बल दिया जाता था। क्योंकि धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष भारतीय जीवन के चरम उद्देश्य थे। उस समय शिक्षा का उद्देश्य नैतिक बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के विकास द्वारा मोक्ष प्राप्त करना था।

9. अधोलिखितस्य संस्कृतभाषायामनुवादो विधेयः - [10]

   "काव्य के स्वरूप के सम्बन्ध में विभिन्न मत स्थापित करने वाले छह प्रस्थान भारतीय काव्यशास्त्र में प्रसिद्ध हैं। काव्य के स्वरूप में दृष्टि भेद के कारण अलङ्कार के विषय में मतभेद स्वाभाविक है। भामह और उद्भट ने शब्दार्थ को अलङ्कार्य मानकर उनमें सौन्दर्य का आधान करने वाले सभी तत्त्वों को अलङ्कार कहा है। आचार्य दण्डी ने अलङ्कार के व्यापक अर्थ में उसे काव्य सौन्दर्य का हेतु कहा है। आचार्य वामन ने अलङ्कार को काव्य सौन्दर्य का पर्याय मानकर काव्य को अलङ्कार के सद्भाव से ही ग्राह्य कहा था। जयदेव ने काव्य लक्षण में अलङ्कार को अनिवार्य माना है।"

----- x -----

http://www.lucknowstudy.com

(छ) आख्यायिका।

(ज) महाकाव्यम्।

(झ) औचित्यम्।

(ञ) प्रकरणम्।

प्रथमो वर्गः

2. काव्यप्रयोजनमधिकृत्य संस्कृतेन निबन्धो लेख्यः। [10]

3. ध्वनेः लक्षणं प्रतिपादनीयम् संस्कृत भाषया। [10]

द्वितीयो वर्गः

4. नायकस्य भेदाः सोदाहरणं संस्कृतभाषायां वर्णनीयाः। [10]

5. श्लेषालङ्कारमधिकृत्य संस्कृतेन निबन्धो लेखनीयः। शब्दश्लेषालङ्कारेऽर्थश्लेषालङ्कारे च को भेदः इत्यपि वर्णनीयम्। [10]

तृतीय वर्गः

6. हिन्दी भाषयामनूद्यताम् - [10]

(क) नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै -

राविभूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।

दग्धारण्येष्वधिकसुरभिंगन्धमाघ्राय चोर्व्याः।

सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्।।

(ख) हिन्दीभाषायामनुवादो विधेयः -

अवश्यभव्येष्वनवग्रहग्रहा

यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।

तृणेन वात्येव तयानुगम्यते

जनस्य चित्तेन भृशावशात्मना।।

7. अधोलिखितस्य हिन्दी भाषायामनुवादो विधेयः - [5]

(क) "भगवन् भारतभुवौ दौर्भाग्येण दिवंगते श्रीमति पुण्ययशोधवलिताशेष धरातले विदलितारतिमण्डले ऽतुलितविक्रमे विक्रमे, परस्परद्वेषाग्निज्वालावलीडेषु राजसु, स्वाश्रयदातृमिथ्याप्रशंसैकतानेषु कविषु, कामिनीकामनासमर्पिताखिल शार्यविभवेषु च शूरेषु कश्चिद् गजिनीवास्तव्यो महामदो द्वादशवारं भारतं समाक्रम्य लुलुण्ठा अस्मिन्नेव क्रमे भारतशिरोमणिभूतं सोमनाथतीर्थमपि धूलिसादकरोन्महादेव मूर्तिश्च समतुत्रुटत् अतुलितं रत्ननिचयं धनञ्च स्वदेशं निन्ये।"

(ख) "ततो योगिराजो ब्रह्मचारिगुरोः कामपि जिज्ञासामधिगत्य आम् यवनानां पराजयो भविष्यति। महाविपद्ग्रस्तोऽपि शिववीरो मित्र सहाय्येन युक्तो भविष्यति। ततोऽपरांतस्य जिज्ञासामुद्दश्य गम्भीरस्वरेणोक्तवान् आम, जीवति कुशलेन, विवाहसमये च द्रक्ष्यति भवान्" तदनन्तरं समुत्थाय गण्डशैलान् समारूह्य तास्मिन्नेव पर्वतकन्दरे तपस्तप्तुं जगाम्।

http://www.lucknowstudy.com